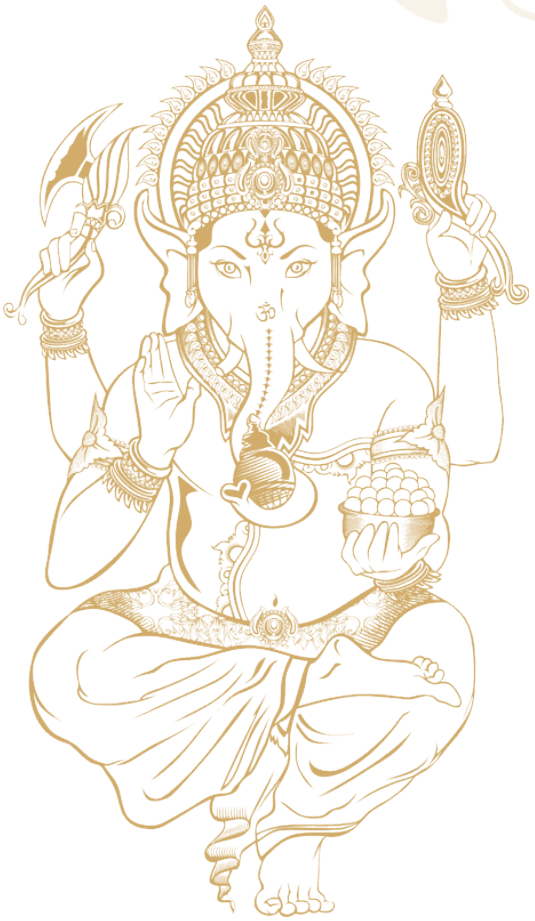

Mr.

22 Dec 2025

01:04 PM

Meerut

Model: Baby-Horoscope **Order No: 120664701**

तिथि 22/12/2025 **समय** 13:04:00 **वार** सोमवार **स्थान** Meerut **चित्रपक्षीय अयनांश** : 24:13:17
अक्षांश 29:00:00 उत्तर **रेखांश** 77:42:00 पूर्व **मध्य रेखांश** 82:30:00 पूर्व **स्थानिक संस्कार** -00:19:12 घंटे

पंचांग

साम्पातिक काल	18:49:15 घं
वेलान्तर	00:01:25 घं
सूर्योदय	07:09:20 घं
सूर्यास्त	17:26:34 घं
चैत्रादि संवत	2082
शक संवत	1947
मास	पौष
पक्ष	शुक्ल
तिथि	3
नक्षत्र	उत्तराषाढ़ा
योग	ध्रुव
करण	तैतिल

अवकहड़ा चक्र

गण	मनुष्य
योनि	नकुल
नाड़ी	अन्त्य
वर्ण	वैश्य
वश्य	जलचर
वर्ग	मूषक
युँजा	अन्त्य
हंसक	भूमि
जन्म नामाक्षर	भो-भोजराज
पाया(रा.-न.)	स्वर्ण-ताम्र
होरा	शुक्र
चौघड़िया	उद्वेग

विंशोत्तरी

सूर्य 3वर्ष 9मा 24दि

सूर्य

22/12/2025
17/10/2029

	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	22/12/2025
गुरु	23/08/2026
शनि	05/08/2027
बुध	11/06/2028
केतु	16/10/2028
शुक्र	17/10/2029

योगिनी

संकटा 5वर्ष 1मा 2दि

संकटा

22/12/2025
25/01/2031

	00/00/0000
	00/00/0000
	22/12/2025
धान्या	06/03/2026
भ्रामरी	25/01/2027
भद्रिका	05/03/2028
उल्का	05/07/2029
सिद्धा	25/01/2031

ग्रह	व	अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			23:17:39	मीन	रेवती	2	बुध	चंद्र	---	0:00			
सूर्य			06:28:48	धनु	मूल	2	केतु	राहु	मित्र राशि	1.51	मातृ	पितृ	मित्र
चंद्र			01:30:54	मक	उत्तराषाढ़ा	2	सूर्य	गुरु	सम राशि	1.38	ज्ञाति	मातृ	जन्म
मंगल		अ	11:04:38	धनु	मूल	4	केतु	शनि	मित्र राशि	1.32	भातृ	भातृ	मित्र
बुध			19:57:57	वृश्चि	ज्येष्ठा	1	बुध	शुक्र	सम राशि	0.92	अमात्य	ज्ञाति	वध
गुरु	व		28:20:38	मिथु	पुनर्वसु	3	गुरु	शुक्र	शत्रु राशि	1.28	आत्मा	धन	प्रत्यारि
शुक्र		अ	02:47:47	धनु	मूल	1	केतु	शुक्र	सम राशि	0.87	पुत्र	कलत्र	मित्र
शनि			01:27:23	मीन	पू०भाद्रपद	4	गुरु	राहु	सम राशि	1.04	कलत्र	आयु	प्रत्यारि
राहु	व		17:16:12	कुंभ	शतभिषा	4	राहु	शुक्र	मित्र राशि		---	ज्ञान	क्षेम
केतु	व		17:16:12	सिंह	पू०फाल्गुनी	2	शुक्र	चंद्र	शत्रु राशि		---	मोक्ष	अतिमित्र

लग्न-चलित

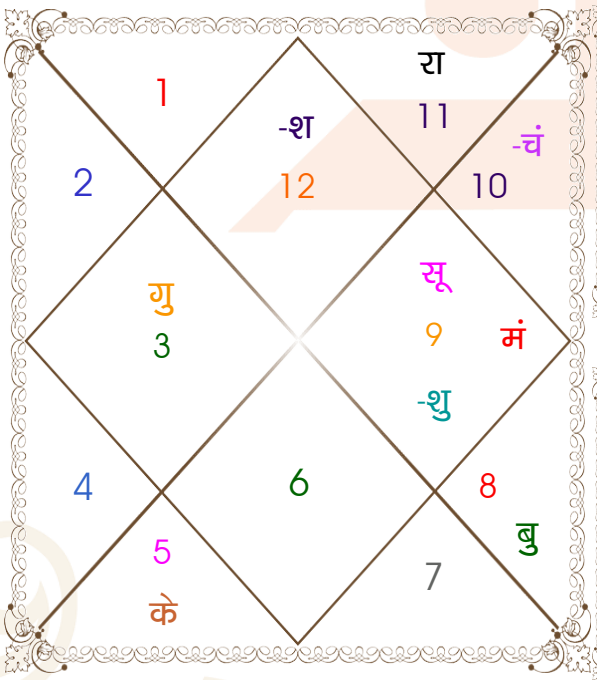

चन्द्र कुंडली

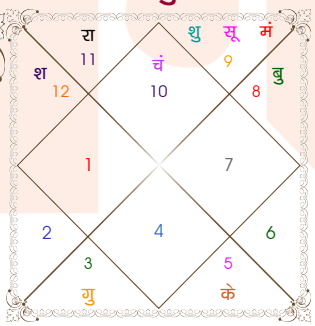

नवमांश कुंडली

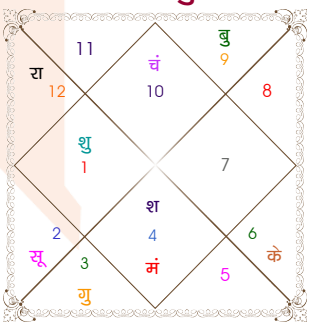

सर्वाष्टकवर्ग

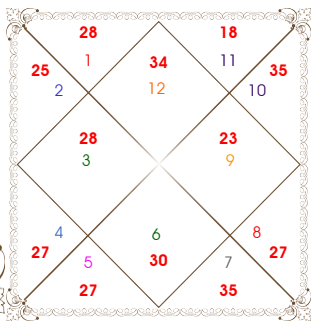

दशमांश कुंडली

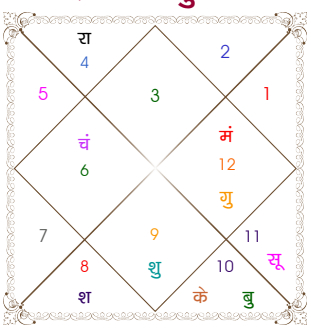

Shree Shree 1008 Mahamandleshwar Paramhans Daati Maharaj
Shri Sidh Shakti Peeth Shanidham Trust
Shree Shani Tirth Kshetra Asola, Fatehpur Beri, Chhatterpur, New Delhi 110074

+919871964972, +91981539237, +919116141210, +919116141211
www.shanidham.org, www.facebook.com/shreeshanidham, www.daati.com
Saturnpublicatins@gmail.com

नक्षत्रफल

आप उत्तराषाढा नक्षत्र के द्वितीय चरण में पैदा हुए हैं। अतः आपकी जन्म राशि मकर तथा राशि स्वामी शनि होगा। नक्षत्र के अनुसार आपका वर्ण वैश्य, गण मनुष्य नाड़ी अन्त्य, योनि नकुल तथा वर्ग मूषक होगा। नक्षत्र के चरण के अनुसार आपके जन्म नाम का आरम्भ "भो" या "भौ" अक्षर से होगा यथा- भोलानाथ आदि।

आप अपने समाज में सम्मानीय व्यक्ति माने जाएंगे तथा सभी लोग आपको यथोचित आदर प्रदान करेंगे। आप सात्विक गुणों से सर्वदा सुसम्पन्न रहेंगे तथा विषम से विषम परिस्थितियों का भी शान्त भाव से सामना तथा समाधान करेंगे। आप अपने जीवन काल में भौतिक तथा सांसारिक सुखों का प्रसन्नता पूर्वक उपभोग करेंगे। धन सम्पति से आप हमेशा युक्त रहेंगे। तथा इसका अभाव आपके पास कम ही रहेगा। साथ ही विभिन्न प्रकार के शास्त्रों का आप ड़ान अर्जन करेंगे। एवं कई कार्यो को करने में भी निपुण रहेंगे। इस प्रकार एक विद्वान के रूप में आप समाज में पूर्ण सम्मानित तथा प्रसिद्ध रहेंगे।

मान्यः शान्तगुणः सुखी च धनवान् विश्वर्क्षजः पंडितः।।
जातकपरिजातः

अर्थात् उत्तराषाढ़ा नक्षत्र में उत्पन्न जातक सम्माननीय सात्विक गुणों से युक्त, सुखी, धनवान तथा पंडित होता है।

आप प्रारम्भ से ही विनयशील रहेंगे तथा आपकी विनम्रता से सभी लोग प्रभावित रहेंगे। धार्मिकता का भाव भी आपके अन्तर्मन में विद्यमान रहेगा। तथा समस्त धार्मिक क्रियाओं का आप श्रद्धा पूर्वक अनुपालन करने के लिए यत्नशील रहेंगे। आपकी मित्रता का क्षेत्र भी विस्तृत रहेगा तथा कई लोगों से आपकी मित्रता रहेगी। इन से आप पूर्ण सहयोग तथा आदर प्राप्त करेंगे। आप में नैसर्गिक रूप से कृतड़ता का गुण रहेगा। अतः अन्य जनों से उपकृत होने पर आप उनके उपकार को स्वीकार करेंगे तथा मन से उन के प्रति आभार भी प्रकट करेंगे। इसके साथ ही आप समाज के सभी वर्गो के मध्य लोकप्रिय भी रहेंगे। एवं उनकी सहायता के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे।

वैश्वे विनीत धार्मिक बहुमित्रकृतज्ञसुभगश्च।।
वृहज्जातकम्

अर्थात् उत्तराषाढ़ा नक्षत्र में उत्पन्न मनुष्य विनयशील, धार्मिक, बहुत मित्रों वाला कृतज्ञ तथा सर्वजनों में लोकप्रिय होता है।

शरीर से आप स्थूल तथा लम्बे रहेंगे। तथा हमेशा शूरवीरता के भाव से युक्त रहेंगे। साथ ही अपने अधिकॉश कार्यो को आप साहस पूर्वक सम्पन्न करके उनमे सफलता अर्जित करेंगे। इसके अतिरिक्त झगड़े तथा विवाद आदि कार्यो से शत्रुपक्ष को पराजित करने में आप प्रायः सफलता ही प्राप्त करेंगे।

बहुमित्रो महाकायो जायते विनीतः सुखी।
उत्तराषाढ़सम्भूतः शूरश्च विजयी भवेत।।
मानसागरी

अर्थात् उत्तराषाढ़ा नक्षत्र में पैदा हुआ जातक अधिक मित्रों वाला, विशाल शरीराकृति से युक्त, विनयी, सुखी, शूरवीर और सर्वत्र विजय प्राप्त करता है।

दानशीलता के भाव से आप हमेशा युक्त रहेंगे। तथा समय समय पर यथा शक्ति इस प्रवृति का पालन करने में तत्पर रहेंगे। साथ ही आप एक दयालु व्यक्ति भी होंगे तथा दीन दुःखियों के प्रति इस भाव का पालन करते हुए उन्हें प्रयत्न पूर्वक अपना सहयोग प्रदान करेंगे। आपके सभी कार्य अच्छे रहेंगे। अन्य लोगों को भी आपके कार्यो से सन्तुष्टि रहेगी। आप एक वैभव शाली पुरूष होंगे। तथा समाज में आपका पूर्ण प्रभुत्व रहेगा। आप स्त्री तथा पुत्रों से युक्त होकर हमेशा सुखपूर्वक अपना जीवन व्यतीत करेंगे। आपका शारीरिक सौन्दर्य दर्शनीय रहेगा। परन्तु कभी कभी आप अन्य जनों के समक्ष अपनी अभिमानी प्रवृति का भी प्रदर्शन करेंगे।

दाता दयावान विजयी विनीतः सत्कर्मकर्ता विभुता समेतः।
कान्तासुतावाप्त सुखो नितान्तं वैश्वे सुवेषः पुरूषोऽभिमानी।।
जातकाभरणम्

अर्थात् उत्तराषाढ़ा नक्षत्र में उत्पन्न जातक दानी, दयालु, विजयी, विनयशील, सत्कार्यकर्ता, प्रभुत्व सम्पन्न, स्त्री और सन्तान से सुखी, अच्छे स्वरूप वाला तथा अभिमानी होता है।

आप स्वर्ण पाद में उत्पन्न हुए हैं। यद्यपि स्वर्ण पाद में उत्पन्न होने के कारण जातक को कई प्रकार से दुःख एवं कष्ट प्राप्त होते है। इस से उसका शारीरिक स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता तथा प्रायः धनाभाव से भी दुःखी रहता है। साथ ही जीवन में सुख संसाधनों से भी हीन रहता है तथा सांसारिक कार्यों में अल्प मात्रा में सफलता प्राप्त होती है जिससे मन में तनाव आदि विद्य मान रहता है। इसके अतिरिक्त जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में उसे अत्यधिक परिश्रम के द्वारा अल्प सफलता अर्जित होती है। चूंकि आपका चन्द्रमा जन्म कुण्डली में शुभ राशि में स्थित है। अतः आपके लिए यह स्वर्ण पाद अधिकांश शुभ फल ही प्रदान करेगा। अतः आप जीवन में समस्त सुख संसाधनों वैभव ऐश्वर्य एवं धनादि से सर्वदा सुसम्पन्न रहेंगे एवं जीवन में पर्याप्त मात्रा में धनार्जन करके समाज में एक धनाढ्य पुरूष के रूप में प्रख्यात रहेंगे। समाज में आप एक सम्माननीय व्यक्ति होंगे तथा सभी लोग आपका हार्दिक सम्मान करेंगे। साथ ही वाहनादि सुखों से भी आप युक्त रहेंगे एवं जीवन में प्रसन्नतापूर्वक इसका उपभोग करेंगे। आप सद्गुणों से सर्वथा सम्पन्न रहेंगे। आपकी पत्नी भी सुन्दर सुशील एवं गुणवान होगी तथा आपके सेवकगण भी ईमानदार रहेंगे। साथ ही आप के लाभ मार्ग भी हमेशा प्रशस्त रहेंगे। आप दीर्घायु होंगे एवं शारीरिक कान्ति भी दर्शनीय रहेंगी। इसके अतिरिक्त पुत्रादि का भी आप पूर्ण रूप से सुख प्राप्त करेंगे।

मकर राशि में उत्पन्न होने के कारण आपका कद ऊँचा रहेगा तथा मस्तक विशालता से युक्त रहेगा। आपकी आँखे अत्यन्त सुन्दर होंगी तथा आप का स्वरूप सुन्दरता से युक्त रहेगा। आपके कंठ एवं कान दीर्घता से युक्त रहेंगे। संगीत के प्रति आपका विशेष आकर्षण रहेगा तथा संगीत शास्त्र के आप अच्छे ज्ञाता रहेंगे। ठंड से आपको काफी व्याकुलता की अनुभूति होगी तथा इसे सहने में आप असमर्थ रहेंगे। सत्य के प्रति आपकी निष्ठा रहेगी एवं इसका अनुपालन करने के लिए आजीवन प्रयत्नशील रहेंगे। इसके साथ ही धर्म के प्रति भी आपकी रूचि रहेगी। समाज में आप एक सम्मानीय पुरूष समझे जाएंगे। तथा दूर दूर तक आपकी ख्याति रहेगी। आप अवसरानुकूल अल्प मात्रा में क्रोध का प्रदर्शन भी करेंगे। आपके मन में काम भावना की भी प्रवलता रहेंगी। आप सभी जनों से स्नेह तथा सम्मान का भी व्यवहार रखेंगे। किसी से घृणा या द्वेष करना आपकी प्रवृति के विरूद्ध होगा। लेखन कार्य के प्रति रूचि रहने के कारण आप काव्य सृजन में सफलता तथा ख्याति अर्जित करने में सफल रहेंगे। आप में पूर्ण उत्साह के भाव का भी अभाव रहेगा तथा यदा कदा अपनी लोलुपता की प्रवृति का भी आप प्रदर्शन करेंगे।

गीतज्ञः शीतभीरूः पृथुलतरशिराः सत्यधर्मोपसेवी
प्रांशुः ख्यातोळल्परोषो मनसिभवयुतो निर्धृणस्त्यक्तलज्जः।।
चार्वक्षः क्षामदेहो गुरूयुवतिरतः सत्कविवृतजङ्घो
मन्दोत्साहोळतिलुब्धः शाशिनि मकरगे दीर्घकण्ठोळतिकर्णः।।
सारावली

आप नित्य अपनी स्त्री तथा पुत्र सहित परिवार के लालन पालन में व्यस्त रहेंगे। तथा वाहयरूप से धर्माचरण में भी रत रहेंगे। कमर भी पतली होगी। आप शीर्घ ही अन्य जनों की बातों से सहमत हो जाएंगे। तथा उसका पालन करने के लिए भी उद्यत होंगे। आप एक आलसी पुरूष भी होंगे तथा शनैः शनैः अपने कार्यो को सम्पन्न करेंगे। परन्तु आपका भाग्य प्रबल रहेगा तथा अधिकाँश शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य अल्प परिश्रम से ही भाग्य द्वारा सिद्ध होंगे। यात्रा तथा भ्रमण आदि करने में आपकी विशेष रूचि रहेंगी। आपका अधिकाँश समय यात्राओं तथा घूमने फिरने में व्यतीत होगा। शारीरिक बल का आप में अभाव नहीं होगा। आपके बल से अन्य लोग भी प्रभावित रहेंगे। आप असम्भव कार्यो को करने तथा अगम्य स्थानों पर जाने की इच्छा करेंगे। जहाँ जनसामान्य जनों के विषय में भी नही सोचेंगे। आप अपने स्वभाव में कठोरता का भी प्रदर्शन करेंगे। एवं जीवन में वात से उत्पन्न होने वाले रोगों से पीड़ित रहेंगे। साथ ही सब गुणों से भी आप सर्वदा सम्पन्न रहेंगे।

नित्यं लालयति स्वदारतनयान्धर्मध्वजोळधः कृशः।
स्वक्षः क्षामकटिर्गृहीतवचनः सौभाग्ययुक्तोळलसः।।
शीतालुर्मनुजोळटनश्च मकरे सत्वधिकः काव्यकृत्।।
लुब्धोडगम्यजराङ्गनासु निरतः सन्त्यक्तलज्जोळघृणः।।
बृहज्जातकम्

आप अपने पारवारिक जनों के मध्य विशेष सम्मान अर्जित करने में समर्थ होंगे।

आप प्रायः स्त्री के वश में रहेंगे एवं उसके कथनुसार ही सांसारिक कार्यों को सम्पन्न करेंगे। विविध शास्त्रों का भी आपको ज्ञान रहेगा। तथा समाज में एक विद्वान के रूप में आपकी प्रतिष्ठा व्याप्त रहेंगी। इसके साथ ही अफवाह आदि फैलाने के कार्य में भी आप निपुण रहेंगे। सुन्दर स्त्रियां हमेशा आपकी प्रसंसक रहेंगी। माता के प्रति आपका विशेष स्नेह तथा सम्मान का भाव रहेगा एवं पुत्र सन्तति से भी आप सुशोभित रहेंगे। धन का आपके पास अभाव नहीं रहेगा तथा इससे प्रायः सम्पन्न ही रहेंगे। आप में त्याग की भावना भी विद्यमान रहेगी तथा समयानुसार आप इसका प्रदर्शन तथा पालन करते रहेंगे।

कुले नष्टो वशः स्त्रीणां पंडितः परिवादकः।
गीतज्ञो ललिताग्राहयो पुत्राढ्यो भातृवत्सलः।।
धनी त्यागी सुभृत्यश्च दयालुर्बहुबान्धवः।
परचिन्तितसौख्यश्च मकरे जायते नरः।।

मानसागरी

आप अपने जीवन काल में किसी अन्य व्यक्ति मित्र या संवधी की सम्पति का सुख पनर्वक उपभोग करेंगे। तथा समाज में अन्य जनों के प्रति भी आप चिन्तन शील रहेंगे। सलाह देने या मंत्रणा करने की भी आपमें निपुणता रहेगी। आप कई प्रकार के कार्यों को करने में भी दक्ष रहेंगे तथा बन्धु वर्ग के आप पालन करने वाले होंगे। इसके अतिरिक्त आप वीरता के गुणों से भी सुसम्पन्न रहेंगे।

विलसति परनारीं लुब्धसम्पत्ति भोगी।
नरपतिरिव चिन्तो मंत्रवाद प्रशस्तः।।
कृशतनुरतियुक्तो बन्धुवर्गस्य भर्ता।
भवति मकरराशिर्दानवो वीरभावः।।

जातक दीपिका

संगीत के प्रति आपका विशेष आकर्षण रहेगा। तथा इसका आपको अच्छा ज्ञान रहेगा आपका शरीर कान्ति तथा लावण्यता से सर्वदा सुशोभित रहेगा। तथा आपके भावना सौन्दर्य वृद्धि में निरन्तर सहायक सिद्ध होगा। आप में काम वासना के भाव की भी प्रवलता रहेगी साथ ही आप परिवार की परम्परा का अनुकरण करते हुए उसे आगे बढाने में निरन्तर तत्पर रहेंगे।

कलितशीतभयः किल गीतवित्तनुरुषासहितो मदनातुरः।
निजकुलोत्तमवृतिकरः परं हिमकरे मकरे पुरुषो भवेत्।।

जातका भरणम्

मनुष्य गण में उत्पन्न होने के कारण आप धार्मिक प्रवृति के व्यक्ति होंगे तथा देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपकी विशेष श्रद्धा तथा सेवा की भावना रहेगी। साथ ही आप धार्मिक कृत्यों का भी आप अनुपालन करने के लिए भी प्रयत्नशील रहेंगे। कभी कभी आप अन्य जनों के समक्ष अपनी अभिमानी प्रवृति का भी प्रदर्शन करेंगे। जिससे अन्य जन आपसे असन्तुष्ट

से रहेंगे। आपके मन में दया तथा करूणा की भावना हमेशा विद्यमान रहेगी। शारीरिक बल से भी आप परिपूर्ण रहेंगे तथा स्वबल से महत्वपूर्ण कार्यों को सिद्ध करने में सफल रहेंगे। नाना प्रकार की कलाओं में भी आप निपुण रहेंगे। तथा विविध शात्रों का ड़ान प्राप्त करने में सफल रहेंगे। एवं समाज में एक विद्वान के रूप में ख्याति अर्जित करेंगे। आपका शरीर सुकान्ति से सुशोभित रहेगा। तथा आपके द्वारा अन्य बहुत से लोग भी सुख की प्राप्ति करेंगे।

समाज में आप एक आदरणीय तथा सम्माननीय व्यक्ति समझे जाएंगे। आप सर्व प्रकार के वैभव एवं ऐश्वर्य से युक्त रहेंगे। आपकी आँखें बड़ी होंगी तथा निशाने बाजी की कला में आप अत्यन्त ही निपुणता तथा ख्याति को अर्जित करेंगी। आपका शारीरिक स्वरूप गौर वर्ण से युक्त होगा तथा नगर वासियों पर आपका पूर्ण प्रभुत्व रहेगा।

देवद्विजार्चाभिरतोभिमानी दयालुर्बलवान कलाज्ञः।
प्राज्ञः सुकान्ति सुखदो बहूनां मर्त्याभवे मर्त्यगणे प्रसूतः।।
जातकाभरणम्

अर्थात् मनुष्य गण में उत्पन्न जातक ब्राह्मण तथा देवताओं का भक्त, अभिमानी, दयालु, बलवान, कला का ज्ञाता, विद्वान, कान्तियुक्त तथा बहुत से मनुष्यों को सुख तथा आश्रय प्रदान करने वाला होता है।

नकुलयोनि में जन्म लेने के कारण आप में परोपकार की भावना नैसर्गिक रूप से विद्यमान रहेगी तथा अपने इस कार्य को आप दक्षता से सम्पन्न करने में प्रयत्नशील रहेंगे। अपने इन कार्यों से आपको समाज में पूर्ण सम्मान तथा ख्याति प्राप्त होगी। आप एक धनवान पुरूष होंगे। तथा अन्य धनाढ्य लोग भी आप के प्रति सम्मान का भाव प्रदर्शित करेंगे। साथ ही आप उच्चकोटि के विद्वान तथा कई संस्थाओं के प्रमुख भी होंगे। माता पिता के आप अत्यन्त प्रिय रहेंगे। तथा आप भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान तथा सेवा का भाव रखेंगे।

परोपकरणे दक्षो वित्तेश्वरविचक्षणः।
पितृमातृप्रियो नित्यं नरो नकुलयोनिजः।।
मानसागरी

अर्थात् नकुलयोनि में उत्पन्न जातस दक्षता के साथ दूसरों का उपकारी, धनियों में सबसे उत्तम और प्रधान तथा पिता-माता में सर्वदा प्रेम बनाए रखने वाला होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति एकादश भाव में है। अतः माता के आप सदैव प्रिय रहेंगे एवं आपके प्रति उनके मन में पूर्ण वात्सल्य तथा स्नेह का भाव विद्यमान रहेंगे। जीवन में आपकी उन्नति एवं समृद्धि के लिए सदैव आपको अपना अमूल्य सहयोग प्रदान करती रहेंगी। साथ ही उन्हीं के सहयोग से आप अपने आय साधनों की वृद्धि करने में सफल हो सकेंगे। इस प्रकार जीवन के समस्त महत्वपूर्ण क्षेत्रों में आपको माता का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। साथ ही मातृपक्ष से भी आपको नित्य धन लाभ होता रहेगा।

आपके मन में भी उनके प्रति हार्दिक श्रद्धा का भाव रहेगा तथा उनकी आज्ञा पालन करना एवं उनकी सेवा करना आप अपना प्रिय कर्तव्य समझेंगे। आपके परस्पर संबंध अत्यन्त ही स्नेहपूर्ण रहेंगे एवं उनमें मतभेदों का प्रायः अभाव ही रहेगा। इस प्रकार आप परस्पर एक दूसरे के लिए शुभ रहेंगे।

आपके जन्म काल में सूर्य दशम भाव में स्थित है अतः पिता के आप प्रिय रहेंगे। उनका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं आयु भी दीर्घ होगी। धनैश्वर्य से वे सर्वदा सुसम्पन्न रहेंगे एवं जीवन के अधिकांश महत्वपूर्ण क्षेत्रों में आपकी उन्नति के लिए अपना पूर्ण आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करेंगे। साथ ही व्यापार तथा आजीविका संबंधी कार्यों में भी उन्हीं की प्रेरणा एवं सहयोग से आप सफलता अर्जित कर सकेंगे।

आपकी भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा एवं सम्मान की भावना रहेगी एवं उनकी आज्ञा का पालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे एवं यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे परन्तु वे शीघ्र ही समाप्त हो जाएंगे। इसके साथ ही आप जीवन में उनको आर्थिक तथा अन्य रूप से पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे तथा सुख दुःख में उनको पूर्ण सहायता तथा सहयोग प्रदान करेंगे।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति दशम भाव में है अतः भाई बहिनों का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा शारीरिक अस्वस्थता भी महसूस करेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह विद्यमान रहेगा। धन सम्पत्ति से वे युक्त रहेंगे एवं जीवन में समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। इसके अतिरिक्त सुख दुःख में भी उनसे वांछित सहयोग आपको प्राप्त होता रहेगा। तथा नौकरी या यपार संबंध कार्यों में भी वे आपको सहपोग प्रदान करगै।

आपके हृदय में भी उनके प्रति पूर्ण स्नेह का भाव रहेगा तथा आपसी संबंधों में भी मधुरता रहेगी परन्तु कई बार मतभेदों के कारण संबंधों में तनाव भी उत्पन्न होगा परन्तु यह अल्प समय तक रहेगा। इसके साथ ही आप आजीविका संबंधी कार्यों में भी उन्हें सहयोग प्रदान करते रहेंगे एवं सुख दुःख में भी एक दूसरे का सहायता करते रहेंगे।

आपके लिए वैशाख मास चतुर्थी नवमी तथा चतुर्दशी तिथियां रोहिणी नक्षत्र, वैधृतियोग, शकुनि करण, मंगलवार, चतुर्थ प्रहर तथा सिहं राशिस्थ चन्द्रमा हमेशा अशुभ फलदायक रहेंगे। अतः आप 15 अप्रैल से 14 मई के मध्य 4,9,14 तिथियों रोहणी नक्षत्र वैधृतियोग तथा शकुनि करण में कोई भी शुभ कार्य व्यापार प्रारम्भ नवगृहनिर्माण, क्रय विक्रय आदि शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी। साथ ही मंगलवार चतुर्थ प्रहर एवं सिहँ राशि के चन्द्रमा को भी शुभ कार्यों में वर्जित ही रखें। इसके साथ ही इन दिनों तथा समय में शारीरिक सुरक्षा एवं स्वास्थ्य के प्रति भी पूर्ण रूप से सावधानी रखें।

यदि आपके लिए समय अशुभ चल रहा हो मानसिक चिन्ता, शारीरिक परेशानी, व्यापार में हानि, नौकरी या पदोन्नति में बाधाएं अथवा अन्य शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में

असफलता मिल रही हो तो ऐसे समय में आपको नृसिँह भगवान की श्रद्धापूर्वक आराधना करनी चाहिए तथा शनिवार के उपवास भी रखने चाहिए। साथ ही सोना, नीलम, लोहा, पंचधातु, तिल, कम्वल, तेल, चर्मपादुका आदि पदार्थों का श्रद्धापूर्वक किसी सुयोग्य पात्र को दान करना चाहिए। इसके साथ ही शनि के तांत्रीय मंत्र के कम से कम 19000 जप किसी योग्य विद्वान के द्वारा सम्पन्न करवाने चाहिए ऐसा करने से आपकी समस्त मानसिक तथा शारीरिक परेशानियां दूर होंगी। तथा अशुभ फलों का प्रभाव कम होगा एवं शुभ प्रभावों में पूर्ण वृद्धि होकर अन्यत्र लाभ मार्ग भी प्रशस्त होंगे।

ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।
मंत्र- ऊँ ऐं हीं श्रीं शनैश्चराय नमः।